HIGH COURT OF JUDICATURE FOR RAJASTHAN
BENCH AT JAIPUR

S.B. Civil Writ Petition No. 10777/2025
URN: CW / 24254U / 2025

Smt Pradeep Lata Mathur W/o Shri Pramod Narain Mathur, Aged About 62 Years, Resident Of C-191, Baan Marg, Behind Lbs College, Tilak Nagar, Jaipur

----Petitioner

Versus

1. Smt Vijaylaxmi Mathur Wife Of Shri Chand Narain D/o Late Shri Sardar Dutt Mathur, Aged About 73 Years, R/o Plot 190/11 Rhb Kumbha Marg, Pratap Nagar, Sanganer Jaipur
2. Smt Shyama Mathur Wife Of Late Shri Ramesh Chandra Mathur, R/o Plot No 39, B Block, Panchsheel, Ajmer
3. Jan, Sadharan
4. Smt Ranjana Mathur Wife Of Late Shri Girdhari Lal Mathur, R/o Purani Mandi, Bachhachraj Bhawan, Ajmer (Hajaf)
5. Smt Shubhlata Mathur W/o Shri Dinesh Mathur, R/o 4/208, Housing Board Colony, Goverdhan Vilas, Udaipur
6. State Bank Of India (State Bank Of Bikaner And Jaipur), Through Manager, D 10, Bhagat Singh Marg, Tilak Nagar, Jaipur
7. Smt Nirmala Mathur W/o Late Shri Gurucharan Dutt Mathur, Aged About 72 Years, R/o Plot No F-2, Kbc-25, Durga Patel Marg, Ayodhya Nagar Jaipur.
8. Akhil Dutt Mathur S/o Late Shri Gurucharan Dutt Mathur, Aged About 38 Years, R/o Plot No F-2, Kbc-25, Durga Patel Marg, Ayodhya Nagar, Jaipur
9. Raghu Dutt Mathur S/o Late Shri Gurucharan Dutt Mathur, Aged About 37 Years, R/o Plot No D 414, Platinum Amaltash, Kanakpura, Sirsi Road, Jaipur

----Respondents

For Petitioner(s) : Ms. Pradeep Lata Mathur
For Respondent(s) :

HON'BLE MRS. JUSTICE SHUBHA MEHTA

Order

16/07/2026

याचिकाकार/विद्वान अधिवक्ता ने इस रिट याचिका को इस कारण वापस लेने की प्रार्थना की है कि धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के अन्तर्गत जिला न्यायाधीश द्वारा पारित किए गए आदेश के विरूद्ध उक्त अधिनियम की धारा 384 के अंतर्गत अपील पोषणीय है। वे उन्हें विधि में प्राप्त उक्त उपचार हेतु कार्यवाही करने की स्वतंत्रता के साथ इस याचिका को वापस लेना चाहती हैं।

याचिकाकार को उक्त उन्मुक्ति प्रदान की जाती है तथा याचिका वापस लेने की अनुमति प्रदान की जाती है एवं याचिका इसी आधार पर निरस्त की जाती है। याचिकाकार द्वारा प्रस्तुत मूल दस्तावेज अथवा सत्यापित दस्तावेजों की प्रतियां रखकर उन्हें लौटा दिए जावें।

यदि याचिकाकार आगे की जाने वाली विधिक कार्यवाही में अन्य न्यायालय के समक्ष धारा 14 परिसीमा अधिनियम के अंतर्गत किसी छूट की प्रार्थना करती है तो वह न्यायालय इस याचिका के लम्बित रहने के तथ्य को ध्यान में रख सकेगा।

तदनुसार स्थगन एवं अन्य प्रार्थना–पत्र यदि कोई हों तो वे भी उक्तानुसार निस्तारित किए जाते हैं।

(SHUBHA MEHTA),J

120/AJAY KUMAR SINGHAL/712